इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में चित्रित प्रतिरोध के स्वर

(Portrayal Of The Voice Of Resistance In The Hindi Short Stories Of 21 Century)

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को हिंदी साहित्य में पीएच.डी. की उपाधि के

पंजीकरण हेतु प्रस्तुत संशोधित रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ.श्रीमती सुमन पलासिया

(सहायक आचार्य –हिंदी विभाग)

माणिक्य लाल वर्मा

राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा(राज.)

शोधार्थी

किशन लाल धाकड़

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर सत्र 2017–18

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर पीएचडी उपाधि
हेतु प्रस्ताविक शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोधार्थी का नाम (अंग्रेजी में)	:	KISHAN LAL DHAKER
शोधार्थी का नाम (हिन्दी में)	:	किशन लाल धाकड़
शोध विषय का शीर्षक (अंग्रेजी में)	:	Portrayal Of The Voice Of Resistance In The Hindi Shortstorie Of 21 Century
शोध विषय का शीर्षक (हिंदी में)	:	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में चित्रित प्रतिरोध के स्वर
शोधकार्य स्थल	:	LOCATION
		(INSTITUTION/DEPARTMENT) हिन्दी विभाग माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय भीलवाड़ा(राज.)

Introduction Importance of the proposed Investigation Objective

(परिचय, प्रस्तावित शोध का महत्व, उद्देश्य)

शोध परिचय (Research Introduction)

संसार का कोई भी छोटे से छोटा जीव ही क्यों ना हो अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रतिरोध करता है। मानव बुद्धिमान होता है, वह कुछ समय तक सहिष्णुता के भार को ढोता चलता है लेकिन जैसे ही उसके अस्तित्व पर संकट आता है तो प्रतिकार करने लगता है। प्रतिरोध का स्वरूप और प्रकृति समय और परिस्थिति के अनुसार अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन प्रतिरोध की संस्कृति हमेशा से रही है।

सिक्के के दो पहलू होते हैं उसका एक पहलू सामंजस्य स्थापित करना रहा है तो दूसरा पहलू प्रतिकार करना रहा है। जब हम अपने अतीत में झांकने का प्रयास करते हैं तब हम पाते हैं कि विद्रोह या प्रतिकार किसी न किसी रूप में हमेशा रहा है समय चाहे जो भी रहा हो आजादी से पूर्व के समय में अंग्रेजों की गुलामी हो या उससे भी पहले सामंतशाही का समय हो या आजादी के बाद का समय रहा हो अनेक विद्रोह हुए हैं जिनका इतिहास साक्षी रहा है।

जब–जब जनहितों पर कुठाराघात हुआ है तब–तब जनाक्रोश की स्थितियां पैदा हुई है। इस जनाक्रोश का नाम समय और स्थान भिन्न–भिन्न रहे हो लेकिन इसके पीछे की मूल भावना एक ही रही है, जो आज भी है और आगे भी कायम रहेगी। प्रतिरोध परिवर्तन की उंगली पकड़कर आगे–आगे चलता है। यह प्रतिरोध की ही देन है कि आज शोषित वंचित और उपेक्षित लोग अपने कटु अनुभव बयान करने में झिझक महसूस नहीं कर रहे हैं।

आजादी के इतने वर्षों बाद भी अनेक प्रकार के छात्र आंदोलन, किसान आंदोलन, आदिवासी आंदोलन, स्त्री आंदोलन आदि पूरी तरह से समाप्त होते दिखाई नहीं दे रहे है वरन दिनोदिन अधिकाधिक बढ़ते जा रहे हैं। क्योंकि निजीकरण को बढ़ावा देने से आज अधिकांश छात्र निजीकरण का शिकार होकर नौकरी की तलाश में भटक रहे हैं। यह निजीकरण उनके आक्रोश का कारण बन रहा है। इस देश का किसान मेहनत करके फसल पैदा करता हैं। अपना सबकुछ दांव पर लगा देता हैं और अंत में उसे अपनी फसल का बाजार में उपयुक्त दाम नहीं मिलता है। तब किसान कर्ज में दब कर आत्महत्या जैसे जघन्य अपराध करता है या प्रतिरोध करता है। किसानों की जमीनों पर आज बहुराष्ट्रीय कंपनियां उद्योग स्थापित करने के नाम पर उनकी जमीन हड़पती जा रही है, जो प्रतिरोध का कारण बनता है।

गरीब आदिवासी जनता का जिस पर पूरा अधिकार था जल,जंगल और जमीन को उनसे छिना जा रहा हैं जिससे भोली भाली आदिवासी जनता विस्थापन को विवश हो रही हैं। एक तरफ सूचना और तकनीकी क्रांति ने लोक कलाओं और हस्तशिल्प को लुप्त प्रायः करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज अपने श्रम आधारित स्वतंत्र जीवन यापन से जुड़े लोगों पर भुखमरी और बेकारी के बादल छा रहे हैं। तो दूसरी तरफ सूचना और तकनीकी क्रांति का फायदा भी हो रहा है कि इन आंदोलनों को व्यापक स्तर पर फैलाने में सहायता मिलती है देखते–देखते प्रतिरोध आंदोलन का रूप धारण कर लेते हैं। प्रतिरोध का यह स्वरूप पहले देखने को नहीं मिलता था। कहने का तात्पर्य यह है कि आज किसी की आवाज को दबाना

दुसाध्य हो गया है। जो जनता के लिए सही भी है। प्रतिरोध का यह नया रूप नई सदी की कहानी में यत्र–तत्र देखा जा सकता है।

हमारे यहॉ प्रतिरोध की संस्कृति की लंबी परंपरा रही है। पिछले 20–25 वर्षों में उदारीकरण, बाजारवाद और वैश्वीकरण ने जहां शोषण के तरीके बदले हैं, वही प्रतिरोध में भी विविधता आई है। जो लोग स्वयं को नीचा, दमित, दलित और कुचलित समझते थे। जो अनेकानेक कुंठाओं से ग्रसित हो जाते थे। नई सदी की कहानी में उनकी कुंठाएँ प्रतिरोध के रूप में मुखर हुई है।

इक्कीसवीं सदी को प्रतिरोध की सदी नाम से भी संबोधित कर सकते हैं क्योंकि आज की कहानी में प्रतिरोध का स्वर बहुत तीक्ष्ण हो चुका है। आज सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, आर्थिक, जातिगत, दलित, स्त्री, आदिवासी, परंपराओं के विरुद्ध, रूढ़ियों के विरुद्ध, मजदूर, कृषक इत्यादि प्रकार से प्रतिरोध जारी है।

प्रतिरोध हमारी संस्कृति का जरूरी हिस्सा बन गया है या ऐसे कह सकते हैं कि प्रतिरोध को संस्कृति से अलग करके देखना अनुचित है। क्योंकि प्रतिरोध की संस्कृति कहती है कि मनुष्य के शोषण का अंत मनुष्य द्वारा ही किया जा सकता है। आज वह समय नहीं है कि प्रेमचंद के **'गोदान'** का अविस्मरणीय चरित्र 'होरी' कहता है कि ''जब गर्दन किसी के पांव तले दबी हो तो उसे सहलाने में ही भलाई है।'' वक्त की अनुकूलता पाते ही प्रतिरोध की यह चिंगारी भड़क उठती है और कभी नहीं बुझने वाली आग का रूप धारण कर लेती हैं।

आज का समय अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों को सहन करने का समय नहीं हैं। साहित्यकार का लक्ष्य भी स्पष्ट है। 1936 में लखनऊ में हुए 'प्रगतिशील लेखक संघ' के प्रथम अधिवेशन में प्रेमचंद ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्यकार के लक्ष्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि ''साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है। उसका दर्जा इतना न गिराइए। वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।'' इक्कीसवीं सदी के कहानीकारों ने साहित्य और साहित्यकार के लक्ष्य को बखूबी निभाया है। आज मजदूर, दलित, ग्रामवासी, बेरोजगार एवं शोषित पीड़ित वर्ग मुक्ति पाने की छटपटाहट में नई सदी की कहानी में संगठित होकर अपना प्रतिरोध दर्ज करवा रहे हैं।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व (Importance of proposed Research)

इक्कीसवीं सदी में जिस तरह की कहानियां लिखी जा रही है उसकी आहट हमें बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में मिलना प्रारंभ हो जाती है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, बाजारीकरण, वैश्वीकरण और संचार क्रांति का व्यापक प्रभाव नई सदी की कहानी में देखा जा सकता है। हिंदी कहानी नए रास्तों पर आगे बढ़ रही है। कहानी की दुनिया में बदलाव आ रहा है और नई सदी के कहानीकार रचनात्मकता की भूमि पर प्रतिरोध के नए मूल्य जोड़ रहे हैं।

1991 में सोवियत समाजवाद का पतन हुआ और इसी के साथ भारत में उदारवाद की शुरुआत हुई। मंदिर और मंडल आंदोलन एक साथ चलें और उनका परिणाम यह हुआ कि भारतीय समाज में पैदा हुई जातियों की खाई और भी चौड़ी होती गई। इसकी परिणति बाबरी मस्जिद के विध्वंस के रूप में सामने आई तो स्वाभाविक है हिंदी कहानी में भी प्रतिरोध की प्रक्रिया तेजी से शुरू हुई। सोवियत संघ के विघटन और भूमंडलीकरण के बाद समाज और साहित्य में स्पष्ट देखा जा सकता है कि 1991 के बाद का समय भारतीय जनमानस में भारी उलट–पुलट करने वाला रहा। इसके साथ–साथ हमारा सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक ढांचा बदला तो जाहिर है कहानी की दुनिया भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाई।

एक तरफ जहां वैश्वीकरण ने व्यक्ति को समाज और परिवार से संकुचित कर स्व पर केंद्रित कर दिया। वहीं दूसरी तरफ निजीकरण और उदारीकरण की आंधी ने न सिर्फ जीवन का यथार्थ बदला अपितु उसे देखने का दृष्टिकोण भी बदल दिया। रही सही कसर संचार क्रांति ने पूरी कर दी। भारतीय गंगा जमुनी तहजीब जिसकी बुनियाद सामूहिकता, सहिष्णुता, सहृदयता, सहकार और सहअस्तित्व की भावना रही है आज सब कुछ विखंडन का शिकार हो चुका है।

नई सदी की कहानी कुंडली मारे बैठी रूढ़ियों और जड़ मान्यताओं के खिलाफ प्रतिरोध करती है। आज की कहानी वंचित और उपेक्षित लोगों की पीड़ा को ही व्यक्त नहीं करती बल्कि उन्हें विद्रोह करने का पूरा मौका देती है। आज की कहानी ने विमर्शों के माध्यम से उन वर्गों की आवाज को और बुलंद किया जिन पर सदियों से अत्याचार होते आ रहे हैं। नई सदी की कहानी के विषय और मुद्दे बहुत कुछ भिन्नता लिए हुए हैं, जैसे आम आदमी, मध्यम वर्ग, स्त्री समाज, कृषक, मजदूर वर्ग, दलित समाज, आदिवासी, अल्पसंख्यक समाज और अन्य हाषिये के समाज भूमंडलीकरण, बाजारवाद, विश्व गांव से जुड़ी हुई कहानियां लिखी जा रही है। जिनमें अलग–अलग दृष्टिकोण का प्रतिरोध दर्ज करवाया गया है।

नई सदी की कहानी में युवा पीढ़ी के साथ इनकी अग्रज और अनुभवी पीढ़ी सक्रिय हैं। जिनमें चित्रा मुद्‌गल, शिवमूर्ति, काशीनाथ सिंह, उदयप्रकाश, अरुण प्रकाश, अखिलेश, मधु कांकरिया, सूरजपाल चौहान, एच आर हरनोट, शिवराज सिंह बेचैन, मोहनदास नैमिशराय, सुशीला टाकभौरे, संजीव, मनोज रूपड़ा, शैलेंद्र सागर, रजनी गुप्त, महेश कटारे, गीतांजलि श्री, जया जादवानी, ओमा शर्मा, भालचंद्र जोशी आदि प्रमुख हैं।

उपर्युक्त कहानीकारों के मार्गदर्शन में अपनी जड़ें जमा चुके युवा पीढ़ी के कहानीकार निम्नानुसार हैं–चंदन पांडेय, विमलेश त्रिपाठी, दीपक श्रीवास्तव, मो. आरिफ, जितेंद्र कुमार बिसारिया, कुणाल सिंह,

मनोज कुमार पांडेय, मनीषा कुलश्रेष्ठ, अरविंद शेष, राजेश प्रसाद, विमल चंद्र पांडेय, टी. श्रीनिवासन, राकेश मिश्रा, अंशु मालवीय, विपिन कुमार शर्मा, राजेंद्र कुमार कनौजिया, पंकज सुबीर, नीलम शंकर, तरुण भटनागर, ओमप्रकाश तिवारी, सुरेश शॉ, जयश्री रॉय, अल्पना मिश्र, आकांक्षा पारे, अनघ शर्मा, इंदिरा दांगी, विवेक मिश्र, शेखर मलिक, कविता, अंजलि काजल, पंखुरी सिन्हा, महुआ माजी, सोनाली सिंह, गौरव सोलंकी, अनीता भारती, अंजु दुआ जैमिनी, गोपालकृष्ण शर्मा 'फिरोजपुरी', रवि बुले, प्रियदर्शन, अजय नावरिया, सत्यनारायण पटेल, किरण सिंह आदि प्रमुख हैं।

इक्कीसवीं सदी की कहानी ग्रामीण व शहरी सभ्यता, संस्कृति, प्रेम, बाजार, बेरोजगारी, स्त्री–पुरुष संबंधों की नई अवधारणा, त्रासदी, औद्योगिकीकरण और संचार क्रांति के फलस्वरुप संबंधों में बिखराव, यौन कुंठा, साम्प्रदायिकता, अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध और संघर्ष को अभिव्यक्त करने में प्रयत्नशील है।

आज हम जिस सांप्रदायिकता के दर्शन कर रहे हैं। उसकी पृष्ठ भूमि अधिकांशतः बाबरी मस्जिद के ध्वंस और गुजरात दंगों की रही है और कुछ जगह यह राजनीतिक दलों द्वारा प्रायोजित लगती है। नीलाक्षी सिंह के **'परिंदे का इंतजार सा कुछ'** कहानी में बाबरी मस्जिद के ध्वंस के बाद सांप्रदायिक दंगे हुए और दो कोमों में जो नफरत की दीवार खिंच गई। इस कहानी में प्रतिरोध का स्वर उन किशोर लड़के–लड़कियों के **'नासमझ ग्रुप'** में देखने को मिलता है। जो लगातार इस अदृश्य दीवार को गिराने की सफल कोशिश करते हैं। वंदनाराग **'यूटोपिया'**, विमलेश त्रिपाठी **'चिंदी चिंदी कथा'**, मो. आरिफ **'चोर सिपाही'**, प्रियदर्शन **'खोटा सिक्का'** आदि कहानियों में सांप्रदायिक प्रतिरोध का स्वर मुखरित हुआ है। पंखुरी सिन्हा की कहानी **'सांत्वना'** में अपने भाई का प्रेम विवाह का समर्थन कर उसकी बहन पुरानी मान्यताओं के विरुद्ध और सामाजिक प्रतिरोध का झंडा उठा लेती है। वंदना राग **'सहादत और अतिक्रमण'** की नायिका अपने पति के शहीद होने के बाद परिवार और समाज उस का शोषण करना चाहते हैं और नेता समाज सेवा की आड़ में अपनी दुकानदारी जमाने को तत्पर है। लेकिन इन सब को ठेंगा बताती हुई **मुन्नी सिंह** अपने पड़ोसी के साथ भाग जाती है जो व्यवस्था के मुंह पर एक जोरदार प्रतिकार का तमाचा है। अजय नावरिया **'बलि'**, कविता **'देहदंश'**, वन्दनाराग **'कबीराखड़ा बाजार में'** आदि कहानियों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था, रूढ़ियों एवं पुरानी मान्यताओं के प्रति गहरे आक्रोश का भाव है।

नई सदी में स्त्री चिंतन की बदलती धारा और प्रवाह के प्रति हमारा समाज इतना तैयार नहीं है जितना उसको होना चाहिए। लेकिन आज की स्त्री अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए हर तरह का प्रतिरोध करने के लिए तत्पर है। यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' की कहानी **'घरौंदा नहीं घर'** की केंद्रीय पात्र 'सरोजा' अपने पति और ससुर के अत्याचारों से तंग आकर पुरानी मान्यताओं और परंपराओं को तोड़ती हुई स्त्री अस्मिता की रक्षा के लिए घर छोड़ कर भाग जाती है। यह आज की नारी है जो अपने अधिकारों से परिचित हैं और उनका प्रयोग करना भी जानती है। वह कहती है कि "पत्नी सदा सहन करती है कि घर का नंगापन बाहर ना जाए। पर आप तो अन्याय पर अन्याय कर रहे हैं। सुनिए मैं तीन दिनों की मोहलत देती हूं फिर मैं अदालत का दरवाजा खटखटाऊँगी।" स्त्री अस्मिता को लेकर लिखी गई कहानियों में नीलाक्षी सिंह **'रंग महल में नाचे राधा'**, वंदनाराग **'शहादत और अतिक्रमण'**, सोनाली सिंह **'सात फेरे'** और महुआ मांझी **'चंद्रबिंदु'** आदि प्रमुख हैं।

उदारीकरण के बाद लोगों पर बाजारवाद किस तरह हावी हो गया कि मनुष्यता आज बाजारवाद के घेरे के इर्द–गिर्द घूम रही है। आज इस बाजारीकरण के दौर में मनुष्य की संवेदनाएं, उसकी इच्छाएं

और आकांक्षाएं सब कुछ बिकाऊ हो गया है। यहां तक की मनुष्य के सपनों का भी व्यवसायीकरण कर दिया गया है। सत्यनारायण पटेल **'लाल छीट वाली लूगड़ी का सपना'**, अजय नावरिया **'गंगा सागर'**, पंखुरी सिन्हा **'किस्सा–ए–कोहिनूर'**, नीलाक्षी सिंह **'उस शहर में चार लोग रहते थे'**, पंकज मित्र **'पड़ताल'** आदि कहानियों में बाजारवाद की विभीषिका के प्रति प्रतिकार देखा जा सकता है।

भूख और बेकारी को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानियों में मो. आरिफ **'मौसम'**, कुणाल सिंह **'आखेटक'**, **'शोकगीत'**, चंदन पांडेय **'भूलना'**, राकेश मिश्रा **'शह और मात'**, रवि बुले **'लापता नत्थू उर्फ दुनिया न माने'**, मनीषा कुलश्रेष्ठ **'स्वांग'**, पंकज मित्र **'बे ला का भू'**, नीलाक्षी सिंह **'टेकबे त टेक न त गो'** जो बाद में **'प्रतियोगी'** नाम से प्रकाशित हुई प्रमुख हैं। शेखर मलिक की कहानी **'डायनमारी'** आदिवासी समाज में प्रचलित कुरीतियां जो मनुष्य को भूखे मरने को विवश करती है। उन कुरीतियों को धराशाही करने का प्रतिरोधात्मक प्रयास हैं। प्रतिरोध समाज में स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व, सौहार्द्र और एकरूपता बनाए रखने के लिए एक अति आवश्यक कदम है। जो इक्कीसवीं सदी की कहानी में उठाया गया है।

प्रस्तुत शोधकार्य इक्कीसवीं सदी की कहानियों में आये प्रतिरोध की विविधताओं को समझने में सहायता प्रदान करेगा। प्रस्तावित शोध में प्रतिरोधात्मक कहानियों को लेकर शोध किया जाएगा। प्रस्तावित शोध के माध्यम से अनेक लोगों और समुदायों को प्रतिरोध करने की ताकत और दिशा मिलेगी जिनका शोषण हो रहा है। साथ ही सामाजिक ज्वलंत मुद्दे सांप्रदायिकता, स्त्री अस्मिता, समलैंगिकता, थर्डजेंडर आदि के प्रति एक खुली सोच विकसित हो सकेगी और पूर्वाग्रहों से मुक्ति मिलेगी।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य(Objectives of proposed Research)

वर्तमान दौर में प्रतिरोध की कहानियां अधिक लिखी जा रही है। प्रस्तावित शोध में हम निम्न उद्देश्यों को लेकर कार्य प्रारंभ करेंगे।

- इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में प्रतिरोध की आवश्यकता प्रासंगिकता और उपयोगिता को रेखांकित करना।
- प्रतिरोध संबंधी सभी कहानियों का अध्ययन कर समाज को प्रतिरोध के वास्तविक यथार्थ से परिचित करवाना।
- प्रतिरोध के नए–नए स्वरूपों और अनुभवों को समाज के समक्ष पहुंचाना।
- हिंदी कहानी में आए प्रतिरोध के स्वर को ध्यान में रखते हुए विभिन्न विमर्शों की पहचान कर उनकी मूल संवेदना पर प्रकाश डालना।
- नई सदी के कहानीकारों के उद्देश्यपरक साक्षात्कार लेकर प्रस्तावित शोध को अधिक विश्वसनीय बनाना।

इक्कीसवीं सदी की कहानियों का अध्ययन कर प्रतिरोध की नवीन अवधारणा को परिभाषित करते हुए प्रतिरोध के सकारात्मक पहलू एवं महत्व को समाज तक पहुंचाना ही प्रस्तावित शौध का प्रमुख उद्देश्य है।

5. प्रस्तावित शोध के विषय पर पूर्व में किए गए कार्यों का पुनरावलोकन (Review of work already done on the Subject of proposed Research study)

पूर्व में किए गए कार्यों का लेखा जोखा करने के पश्चात ही उद्देश्यपरक योजना का निर्माण किया जा सकता है। क्योंकि योजना ही अपने शोध की दिशा एवं दशा निर्धारित करती है। प्रस्तावित शोध विषय को ध्यान में रखते हुए पूर्व में किए गए कार्यों के पुनरावलोकन द्वारा यह ज्ञात हुआ कि प्रतिरोध को लेकर काम हुआ है, लेकिन व्यापक स्तर पर नहीं हुआ। इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में प्रतिरोध को लेकर अब तक कोई कार्य नहीं हुआ है।

इससे पूर्व संबंधित विषय पर किए गए शोध कार्य निम्नानुसार

- अहिंसक प्रतिरोध के बदलते स्वरूप, शोधार्थी–चित्रा माली, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (2006–07)
- समकालीन हिंदी कविता में प्रतिरोध (स्त्री काव्य लेखन के विशेष संदर्भ में), शोधार्थी–जयप्रकाश, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली (2016)
- हिंदी के नाटकों में राजनीतिक सत्ता का प्रतिरोध (1975 से 1985 तक के प्रतिरोध नाटकों के विशेष संदर्भ में), शोधार्थी–प्रदीप कुमार, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर (2015)
- नागार्जुन की कविता में अभिव्यक्त प्रतिरोध का स्वर, शोधार्थी–संतोष कुमार सुमन, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (2016)
- इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में सामाजिक न्याय, शोधार्थी–शालिनी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (2012)
- इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी दृष्टि और सरोकार, शोधार्थी–कृष्ण कुमार, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (2012)
- प्रमाणिक अनुभूति और इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी, शोधार्थी–राजेश कुमार पांडेय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (2006)

उपर्युक्त शोध कार्य के द्वारा यह ज्ञात होता है कि प्रतिरोध के विषय को लेकर शोध कार्य तो हुए हैं। लेकिन इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी में प्रतिरोध को लेकर स्थिति धुंधली नजर आती है। प्रस्तावित शोध के माध्यम से एक नए दृष्टिकोण के साथ इस धुंधलके को साफ किया जाएगा। प्रतिरोध के संबंध में एक नया दृष्टिकोण का निर्माण करना ही प्रस्तुत शोध से अपेक्षित है।

6. प्रस्तावित शोध कार्य व संबंधित विषय से पूर्व में हुए शोध कार्य में अंतराल Proposed Research work and gap in the previous research work with related subject (Based on the review)

प्रस्तावित विषय पर किसी भी शोधार्थी द्वारा एक समग्र अध्ययन नहीं किया गया। जो भी इस विषय पर अध्ययन हुआ है उसमें पिछली सदी के नाटक, कहानी, कविता और व्यक्ति विशेष के साहित्य में प्रतिरोध पर टुकड़ों में काम हुआ है। प्रस्तुत शोध में इक्कीसवीं सदी की कहानियों में आये प्रतिरोध का वर्तमान संदर्भ में अध्ययन कर ऐसे सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को सामने लाने का प्रयास किया जाएगा जो पूर्ववत शोध में प्रकट नहीं हो पाए थे। प्रस्तावित शोध के माध्यम से प्रतिरोध के स्वर का समग्र रूप में अध्ययन कर शोध अंतराल को पाटने का काम किया जाएगा।

7. मुख्य परिकल्पना (Major Hypothesis)

प्रस्तावित शोध के माध्यम से इक्कीसवीं सदी की कहानियों में आए प्रतिरोध के स्वर को विभिन्न विमर्शों के आधार पर उसकी मूल संवेदना, परिवेश, दृष्टिकोण और यथार्थवादी विचारधारा को समझने में सहायता मिलेगी। एक नवीन शोध की प्राप्ति के साथ साहित्य, समाज एवं विद्यार्थियों को इक्कीसवीं सदी के संदर्भ में प्रतिरोध को समझने की एक नवीन संकल्पना विकसित हो सकेगी। साथ ही इस शोध के अध्ययन के बाद शोषित एवं पीड़ित वर्ग में जागृति आएगी और उनको मुख्यधारा में शामिल होने में आ रही बाधाएँ कुछ हद तक कम होगी।

8. शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में जोसेफ गिबाल्डी की पुस्तक एम. एल.ए. हैंडबुक का अनुसरण करते हुए इंडेक्स पद्धति से कार्य करना समीचीन होगा। यह पद्धति पूर्णरूपेण परीक्षित है तथा आधुनिक अध्येकाओं द्वारा निर्देशित विस्तृत रूप से प्रयुक्त की जाती है।

इस पद्धति ने अध्येता द्वारा जितना संभव हो अधिकाधिक संदर्भ संकलित किए जाते हैं, उन्हें एक साथ तर्कसम्मत क्रम में आयोजित किया जाता है और उन के आधार पर उन्हें समन्वित कर एक चिंतन प्रस्तुत शोध के रूप में विकसित किया जाता है।

आंकड़ों का स्रोत–

(1) **प्राथमिक स्रोत–** वह कथा संग्रह जिनमें इक्कीसवीं सदी की प्रतिरोध के स्वर की कहानियां संग्रहित हैं या वह पत्रिकाएं जिनमें प्रतिरोध की कहानियां प्रकाशित हुई हैं।

(2) **द्वितीयक स्रोत–** इक्कीसवीं सदी की प्रतिरोध के स्वर की कहानियों पर लिखे गए आलेख, शोधपत्र, समीक्षात्मक एवं आलोचनात्मक पुस्तकें। इस संदर्भ में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं, प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और इंटरनेट पर प्रकाशित उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जाएगा।

9. अध्याय योजना (Chapterization)

पहला अध्याय : प्रतिरोध का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप : परिचय

- प्रतिरोध का अर्थ एवं परिभाषा
- प्रतिरोध का स्वरूप
- सामाजिक प्रतिरोध
- राजनीतिक प्रतिरोध
- आर्थिक प्रतिरोध
- धार्मिक प्रतिरोध
- सांस्कृतिक प्रतिरोध

दूसरा अध्याय : इक्कीसवीं सदी की कहानियों में प्रतिरोध का स्वर

- पूर्वपीठिका
- इक्कीसवीं सदी की कहानी का परिचय

- प्रथम चरण (2001 से 2005)
- द्वितीय चरण (2006 से 2010)
- तृतीय चरण (2011 से 2015)

तीसरा अध्याय : इक्कीसवीं सदी के विभिन्न विमर्श और प्रतिरोध

- विमर्श का आशय और महत्व
- स्त्री अस्मिता और प्रतिरोध
- आदिवासी जीवन और प्रतिरोध
- दलित पीड़ा संघर्ष और प्रतिरोध
- प्रवासी जीवन और प्रतिरोध
- किन्नर और प्रतिरोध
- मीडिया और प्रतिरोध
- सांप्रदायिकता और प्रतिरोध
- मजदूर एवं किसान प्रतिरोध
- व्यवस्था और प्रतिरोध
- युवा प्रतिरोध

चौथा अध्याय : इक्कीसवीं सदी के दौर में बदलते प्रतिरोध के स्वर

- स्त्री का नवीन स्वरूप और पितृसत्ता का विरोध
- आदिवासी जीवन और उभरता नवीन संघर्ष
- दलित शोषण के प्रति विद्रोह का बदलता स्वरूप
- संचार क्रांति और मीडिया का प्रभाव
- प्रवासी जीवन और वैश्वीकरण में प्रतिरोध
- कृषक और मजदूर वर्ग संघर्ष के विरुद्ध तीखी प्रतिक्रिया

पांचवा अध्याय : इक्कीसवीं सदी की कहानी में समसामयिक प्रतिरोध

- बाजारवाद
- भूमंडलीकरण
- शहरीकरण
- सांप्रदायिकता
- आतंकवाद
- मजदूर और किसान वर्ग का आक्रोश
- विस्थापन की पीड़ा
- पर्यावरण की चिंताएँ

छठा अध्याय : चयनित कहानीकारों के साक्षात्कार

सातवाँ अध्याय : इक्कीसवीं सदी के बदलते परिप्रेक्ष्य में कहानी लेखन में उभरते प्रतिरोध की नवीन संकल्पना

आठवाँ अध्यायः उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) आधार ग्रन्थ
(2) सहायक ग्रन्थ
(3) शब्दकोश
(4) पत्र पत्रिकाएं
(5) अन्य

10. संदर्भ सूची संलग्न (Bibliography)

अनुक्रमणिका

- **आधार ग्रंथः इक्कीसवीं सदी के प्रमुख कथा संग्रह**
  - अंजुदुआ, जैमिनी, क्या गुनाह किया, कल्याणी शिक्षा परिषद नई दिल्ली, 2007
  - अखिलेश, अंधेरा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2006
  - उदयप्रकाश, तिरिछ, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
  - डॉ. शर्मा, यादवेंद्र 'चंद्र', वाहकिन्नी वाह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2009
  - कविता, मेरे नाक के कपड़े, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, 2006
  - काकरिया, मधु, और अंत में यीशु, किताब घर प्रकाशन, 2006
  - कुलश्रेष्ठ, मनीषा, कुछ भी तो रूमानी नहीं, अंतिका प्रकाशन गाजियाबाद उत्तर प्रदेश, 2008
  - गोपेश, अनीता, कित्ता पानी, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, 2009
  - चौधरी, उमाशंकर, कट टू दिल्ली, और अन्य कहानियां आधार प्रकाशन पंचकूला हरियाणा, 2013
  - जादवानी, जया, मैं अपनी मिट्टी में खड़ी हूं कंधे पर अपना हल लिये, वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण, 2009
  - त्रिपाठी, विमलेश, अंधेरे अंत की शुरुआत, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, 2004
  - परवेज, मेहरूनिसा, मेरी बस्तर की कहानियां, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2006
  - पांडेय, चंदन, भूलना, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, 2004
  - प्रकाश, अरुण, जल प्रांतर, अंतिका प्रकाशन गाजियाबाद उत्तर प्रदेश, 2013
  - प्रत्यक्षा, जंगल का जादू तिल–तिल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, 2009
  - प्रियदर्शन, उसके हिस्से का जादू, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2007
  - प्रीतम, अमृता, मेरी प्रिय कहानियां, राजपाल एंड संस,, 2014
  - बनवासी, कैलाश, बाजार में रामधन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2004
  - बुले, रवि, आईने सपने और वसंतसेना, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, 2008
  - मित्र, पंकज, जिद्दी रेडियो, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2014
  - मिश्र, अल्पना, भीतर का वक्त, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2006
  - मुद्गल, चित्रा, देहदेहरी, साहित्य प्रकाशन दिल्ली, 2003
  - वंदनाराग,यूटोपिया, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2010
  - वंदनाराग, हिजरत से पहले, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2015
  - वजाहत, असगर, मैं हिंदू हूँ, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2007
  - वाल्मीकि, ओमप्रकाश, घुसपैठिए, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2003
  - शर्मा, नाशिरा,पत्थर गली, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2002
  - शर्मा, यादवेंद्र 'चंद्र', वाह किन्नी वाह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2009
  - शिवमूर्ति, केसर कस्तूरी, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2007
  - संजीव, दुनिया की सबसे हसीन औरत, यात्री प्रकाशन दिल्ली, 2010
  - सिंह, कुणाल, सनातन बाबू का दांपत्य, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2007
  - सिंह, दूधनाथ, निष्कासन, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 2002
  - सिंह, नीलाक्षी, परिंदे का इंतजार सा कुछ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2006
  - सिंह, सोनाली, क्यूटी पाई, सामयिक प्रकाशन, 2013
  - सुबीर, पंकज, चोपड़ा की चुड़ैल, शिवना प्रकाशन, 2017

संदर्भ ग्रंथः प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथ

- अंकित, प्रियम, पूर्वाग्रहों के विरुद्ध, आधार प्रकाशन पंचकूला हरियाणा, 2011
- अग्रवाल, पुरुषोत्तम, संस्कृति वर्चस्व और प्रतिरोध, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2008
- अग्रवाल, रोहिणी हिंदी कहानी वक्त की शिनाख्त और सृजन, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 2015
- उर्मिलेश, सम्पादक– उदारीकरण और विकास का सच, अनामिका पब्लिशर्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2010
- कालिया, ममता, नई सदी की पहचान श्रेष्ठ महिला कथाकार, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, 2002
- डॉ. कीर्ति, विमल, स्त्री और दलित मुक्ति का तुलनात्मक अध्ययन, अक्षर प्रकाशन अंसारी रोड दरियागंज, 2001
- चौबे, देवेंद्र, समकालीन कहानी का समाजशास्त्र, प्रकाशन संस्थान दिल्ली, 2001
- त्रिपाठी, विश्वनाथ, कुछ कहानियां : कुछ विचार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1998
- नारायण, बद्री, प्रतिरोध की संस्कृति, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2012
- पांडेय, मैनेजर, भारतीय समाज में प्रतिरोध की परंपरा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2013
- पालीवाल, सूरज, इक्कीसवी सदी का पहला दशक और हिंदी कहानी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2012
- बिहारी, राकेश, केंद्र में कहानी, शिल्पायन प्रकाशन शाहदरा दिल्ली, 2013
- भादू, राजाराम, धर्म सत्ता : प्रतिरोध की संस्कृति, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2003
- भारती,अनीता, समकालीन नारीवाद और दलित स्त्री का प्रतिरोध, स्वराज प्रकाशन, 2013
- मधुरेश, हिंदी कहानी अस्मिता की तलाश, आधार प्रकाशन पंचकुला हरियाणा, 2005
- मधुरेश, हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2007
- डॉ. मेघ, रमेश कुंतल, आधुनिकताबोध और आधुनिकीकरण, अक्षर प्रकाशन दिल्ली, 1996
- राय, गोपाल, हिंदी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2014
- रोहिताश्व, समकालीन उपन्यास और प्रतिरोध के स्वर, (आलेख) अनभै पत्रिका दादर मुंबई, जनवरी मार्च अंक 2012
- वाल्मीकि, ओमप्रकाश, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001
- निराला, विवेक, निराला साहित्य में प्रतिरोध के स्वर, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2010
- डॉ. व्होरा, आशारानी, नारी शोषण : आईने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 1982
- शैलजा, समकालीन हिंदी कहानी बदलते जीवन संदर्भ, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2014
- सिंह, कुमार, अमित, भूमंडलीकरण और भारत : परिदृश्य और विकल्प, सामयिक प्रकाश नई दिल्ली, 2009

पत्र–पत्रिकाएं

- अनुसंधान, हिंदी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय
- कथादेश, संपादक, हरिनारायण, वसुंधरा प्रकाशन, नई दिल्ली
- कथाबिंब, संपादक, डॉ माधव सक्सेना, मुंबई
- जनकृति, संपादक, कुमार गौरव मिश्रा, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा महाराष्ट्र
- जनसत्ता, संपादक, ओमथानवी, इंडियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली
- तद्‌भव, संपादक, अखिलेश, इंदिरा नगर लखनऊ,उ.प्र.
- नया ज्ञानोदय, संपादक, लीलाधर मंडलोई, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली
- नवभारत टाइम्स, संपादक, गिरिराजशरण अग्रवाल, नई दिल्ली
- बया, संपादक, गौरीनाथ, अंतिका प्रकाशन गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
- बहुवचन, संपादक, गिरीश्वर मिश्र, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र
- भाषा पत्रिका, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली
- मधुमती, संपादक, ईश मधु तलवार, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
- रचना समय, संपादक, बृज नारायण शर्मा, अनिल जनविजय, कोलार रोड, भोपाल
- वागर्थ, संपादक,एकांत श्रीवास्तव, कुसुम खेमानी, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता
- समकालीन साहित्य समाचार, संपादक, सत्यव्रत, अंसारी रोड दरियागंज नई, दिल्ली
- साक्षात्कार, संपादक, हरि भटनागर, बाणगंगा चौक,भोपाल
- हंस, सम्पादक,राजेंद्र यादव, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली
- हिंदी चेतना, संपादक, निकेतन साहित्य विहार बिजनौर, उ.प्र.

ई पत्रिकाएं–

प्रतिलिपि (http://hindi-pratilipi-com/)
हिंदी साहित्य (https://vimisahitya-wordpress-com/)
हिंदी साहित्य दर्पण (http://www-hindisahityadarpan-in/)
गद्य कोश (http://gadyakosh-org/)
कविता कोश (http://kavitakosh-org/)
हिंदी वेबदुनियाँ (http://hindi-webdunia-com/literature)
साहित्य कुञ्ज (http://www-sahityakunj-net/)

Outline Approved

Dr.(Mrs.) SUMAN PALASIA
Name and Signature of Supervisor with Date and Seal

KISHAN LAL DHAKER
Signature of Candidate with Date